अरविन्द कुमार त्रिपाठी
द्वारा
पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन





भाषा व स्थानीय बोलियां
Language & Local Dialects

Puratan BANDA, Bundelkhand ka Sankshipt Varnan

Arvind Kumar Tripathi

ISBN : 978-93-5906-820-6

भाषा व स्थानीय बोलियां Language & Local Dialects

अध्याय शीर्षक	भाषा व स्थानीय बोलियां
सर्वाधिकार	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
आइ एस बी एन/ **ISBN**	**978-93-5906-820-6**
प्रकाशक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक ग्राम – अछरौन्ड, बान्दा – 210 001 उत्तर प्रदेश
मूल्य	निःशुल्क, पुस्तक मित्र को देना
सन्स्करण	प्रथम, 01 अप्रैल 2020
आवरण/मुखपृष्ठ	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
शब्द – संयोजन	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
मुद्रक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
सन्दर्भ/साभार/सौजन्य	अध्याय **Reference** देखे

Chapter Heading	**Language & Local Dialects**
Copyright @	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
ISBN	**978-93-5906-820-6**
Publisher	**Arvind Kumar Tripathi** **Village - Achharaund** **Banda - 210 001** **Uttar Pradesh**
Price	**Free, Circulate to Friends**
Edition	**First, 01 April 2020**
Cover Main	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Word Compositor	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Printer	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Reference/ Gratitude/ courtesy	**Peruse Chapter - REFERENCE**

भाषा व स्थानीय बोलियां Language & Local Dialects

भाषा व स्थानीय बोलियां Language & Local Dialects

पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड – भाषा व स्थानीय बोलियां का संक्षिप्त वर्णन

भाषा व स्थानीय बोलियां Language & Local Dialects

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

भाषा व स्थानीय बोलियां

प्रस्तावना

भारत विविधता को समेटे एक ऐसा देश है जहां पर 22 मान्यता प्राप्त भाषा सहित 144 से अधिक भाषाएं और हजारों बोलियां बोली जाती हैं। 9 नवंबर 2022 के अनुसार देश के कोने–कोने में बोली जा रही 576 भाषाओं और बोलियों के सर्वेक्षण का काम गृह मंत्रालय ने पूरा कर लिया है। मातृभाषा सर्वे आफ इंडिया के तहत उपलब्ध सभी तकनीक का इसमें उपयोग किया गया है ताकि मातृभाषाओं के मूल स्वरूप और मिठास को बनाए रखने की में सहयोगी व उपयोगी होगा।

जहां विभिन्न क्षेत्र में लोगों की चमड़ी कारण, शरीर की संरचना, चेहरे के बनावट आदि अलग–अलग है, खानपान और संस्कृति में भी अंतर है। इन विविधताओं को स्वीकार करते हुए लोगों ने शांति से रहना सीख लिया है।

भाषाई आधार पर बुन्देलखण्ड क्षेत्र व बान्दा की पहचान

भारतेंदु हरिश्चंद का कथन व भाषा के बारे में कहा जाता है

चार कोस पर पानी बदले, आठ कोस पर वाणी
बीस कोस पर पगड़ी बदले, तीस कोस पर धानी

आज भी चरितार्थ हो रहा है। विदेशों से व्यापार करने के लिए संप्रेषण के लिए आवश्यकतानुसार भाषा अपनानी पड़ती है।

सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड क्षेत्र व बान्दा की पहचान भाषाई आधार पर भी की जाती है और की जा सकती है। सन्साधन, आवागमन के रास्ते, सन्चार व्यवस्था ना होने के कारण ये भाषाएं, आपस में बहुत ज्यादा मिल–जुल नहीं पाई जो बहुत आवश्यक है। हर छोटी–छोटी सी जगहों की अपनी–अपनी भाषाएं हैं। बान्दा, हमीरपुर, जालौन, झान्सी, ललितपुर, छतरपुर, पन्ना में अलग–अलग तरह की भाषाएं बोली जाती हैं। जिनमें विभिन्न भाषाएं बोली जाती हैं।

प 15

सम्भाग	जिला	भाषा
झान्सी	जालौन	लुघाटी, स्तरीय बुन्देलखण्डी, राठौड़ी
चित्रकूटधाम	हमीरपुर	लुघाटी(दक्षिण पूर्वी भाग), कुड़री, राठौड़ी
	बान्दा	बनाफारी, कुड़री
	ललितपुर	स्तरीय बुन्देलखण्डी
	झान्सी	स्तरीय बुन्देलखण्डी
मंडल ग्वालियर	ग्वालियर	पूर्वी भाग में स्तरीय बुन्देलखण्डी, उत्तरी भाग में पंवारी
	मुरैना	भदावरी, तोमर गढ़ी
	भिन्ड	भदावरी तोमर गढ़ी
	शिवपुरी	भदावरी तोमर गढ़ी
सागर	दतिया	पन्नारी
	सागर	स्तरीय बुन्देलखण्डी

	दमोह	खटोला, स्तरीय बुन्देलखण्डी
	टीकमगढ़	स्तरीय बुन्देलखण्डी
	पन्ना	खटोला, स्तरीय बुन्देलखण्डी
	छतरपुर	स्तरीय बुन्देलखण्डी, बनाफारी, कुड़री
जबलपुर	मन्डला	गौड़वानी
	नरसिन्हपुर	लुघाटी
	गाड़रवारा	लुघाटी

बान्दा जनपद में कुछ और उपभाषाएं बोली जाती हैं जिन्हें तिरहारी, कोल्हाई, अन्तरपठा, गहोरापठा, जाड़, जुड़र, बनाफरी और ददरिया आदि भाषाओं के नाम से पुकारा जाता है। बुन्देलखण्डी अथवा बुन्देली भाषा में उत्कृष्ट लोक साहित्य सुलभ है। इन्हें लोक काव्य, लोक कथा व लोक नाट्य में विभाजित किया जाता है। आज का समाज परम्परागत भाषा का परित्याग करके खड़ी बोली का अनुसरण कर रहा है, जिससे बुन्देली भाषा पतोन्मुख हो रही है। कतिपय साहित्यकारों ने बुन्देली भाषा में साहित्य सर्जन/सृजन किया है जिससे यह भाषा गौरवान्वित हुई है।

बान्दा शब्द व अर्थ

षणानन	स्वामि–कार्तिक
रुख	सूखा वृक्ष
रुखौ	बिना सहयोगी खाद्य–वस्तु के
रुंद	खेत; जो घास के लिए रक्षित किया गया हो
रुपाई	स्थिर कर देना
रुवां–रुवां	रोम–रोम
रुआयटें	रोना–धोना
एंबाती	सधवा (स्त्री)
एरों–चालौ	शोर–गुल
ऐंठा	अकड़
ऐंनई	पर्याप्त
ऐंगर	पास में
ऐरौ	आवाज
एनईं	पर्याप्त
धरता	सूदखोरों दवारा ब्याज पर दी जाने वाली राशि में से पहले से ही एक वर्ष के ब्याज के बराबर काटी गई राशि; जिसका सामयिक ब्याज की गणना में समायोजन नहीं होता
धारण	हिस्से की संपत्ति
धौर	दौड़कर
धौरी	सफेद
धौन	धोने से निकला पानी या अन्य तरल पदार्थ
धुन्दुआ	धुंआं निकालने के लिए विशेष रूप से बनाया जाने वाला ताक या छेद या चिमनी
धजी	कपड़े की पतली लंबी पट्टी
धन्नो	किसी मांग को लेकर अड़कर बैठने की क्रिया
घरया	सुरक्षित ढंग से
घरखेला	रेत का घर
घरैनी	गृहिणी
घाई	जैसे
घामें	धूप
घोरुवा	कोदों के आरे को मद्रा में घोलकर एक प्रकार की गाढ़ी कदी

घोकिया	विचारक
घोलना	व्यक्ति; जिसे किसी ग्राम्य देवता का आवेश आता हो
घानी	तिलहन की उतनी मात्रा; जो कोल्हू में एक बार में पेरी जा सके
घाटौ	आर्थिक नुकसान
घाल	मारना
घाल घलाव	मारना–मरवाना
घाल मिचक्की	झूले की पेंग
घुआरा	उल्लू
खबास	नाई
खरिया/खडिया	लिखने या पोतने की सफेद मुलायम मिट्टी
खसियन	स्त्रियों जैसे स्वभाव वाला पुरुष या पुरुषों जैसे स्वभाव वाली स्त्री (लक्षणार्थ)
खीसन	दाँतों के नीचे
खर	तिलहनों से तेल निकाल लेने के बाद बचा फोक
खरया	उत्पात
खांतर धरम	नावते–गुनियों द्वारा एक सूप में अनाज के कुछ दानों को रखकर देवी–देवताओं से बात करने की क्रिया
खाडू	व्यापारिक कारवां
खौ	अन्न एकत्र करने का गहरा गडा (खात)
खोंट–खांट	आंशिक ग्रहण करना
खौड़ियन	अनाज रखने का भूमिगत बखार
खोर	दोष
खोरन–खोरन	गली–गली
खाजा	खस्ता और कुरकुरी लमं
खसम	पति
खडैरा	खंडहर
खुंटिन	अंटी
खुंसयात	क्रोधित होना
खुरोरु	नारियल की गरी
खुन्स	खुन्नस
खलीतन	जेब
ढबुआ	घास और छप्पर का गुंबदनुमा घर
ढक्का	धक्का
ढोर	पालतू पशु
ढेचू–ढेचू	गधे की ध्वनि
झक्कू–दैंके	बेवकूफ बनाना
झरोके	भीतर तक का देखना
झांप	आँचल की पर्दा में
झांपो	खिड्की–दरवाजे के सामने से
झांजी	बैलगाड़ी की बगलों में लगाई जाने वाली रोक
झुली परै	संध्या का अधेरा होने पर
झट्टई	जल्दी से
झलैयन	थोड़ी देर की वर्षा में भीगकर खेला जाने वाला खेल
ऊंग	नींद
इंदयाइ	अँधेरा होने पर एक मानसिक बीमारी, जिसमें अँधेरे को भगाने के लिए अंधविश्वास से लोग झाडू लगाकर अथवा अन्य काम करते थे
ठकरासी	ठाकुर
ठरगजे	तिरस्कार सूचक
ठाडौ	खड़ा होना
ठुन्यानी	क्रोध में उन्मत्त

इन्दरसे	चावल से तैयार मीठी मटरी
ठन्नइया	धातु (पैसे) से टकराकर निकली ध्वनि
ठट्ट	तमाशबीनों का झुंड
ठल्ली	फुरसत में
बर्रु राव	सपने में
ब्यावन काजन	विवाह आदि मांगलिक कार्यों में
बखर	खेत का खरपतवार निकालने वाला लकड़ी का यंत्र
बंटा धार	नेस्तनाबूद होना
बइयरें	स्त्रियां
बकायन	महानीम
बकौड़े	पलाश की जड़ से निकाली जाने वाली रेशेदार पट्टियां; जिनसे रस्सी तैयार की जाती है।
बकचा	ढीली बँधी पोटली, जिसको कथे पर लटकाया जा सके
बकटें	फैली हुई उंगलियों से भरी हुई मुदरी
बमकत	उछलना—कूदना
बमभुलिया	छोटे छंदों वाले गीत
बमाव	अवरोधक
बमूरा	बबूल
बरिया	बरगद
बरय	खेतों में पानी ले जाने वाली नाली
बरयानो	रोकने के बाद भी होना
बरकाव	बीच—बचाव
बरी	पकोडी
बराई	गन्ना
बर्रा	सिल—बट्टा से उड़द की दाल पीस कर कड़ाही से निकाले गए बड़ा; जो काजी में गलाए जाते हैं
बर्राटन	स्वप्न में
बरै	जलती हुई
बरेदी	गाय—भैंसों को चराने के लिए ले जाने वाला व्यक्ति
बर्रइयन	चीटें की सी बनावट वाले लाल पीले रंग के डंक मारने वाले कीड़े
बायरे	बाहर
बांट	वितरित करना
बांट	पशुओं को दिया जाने वाला अवशिष्ट एवं बासी भोजन
बारांगना	वेश्या
बारे	छोटी उम्र में
बौंड	आगे बढ़ना
बोंडारें	विवाह में भेंट के रूप में लाई गई साड़ियां
बौलन	लता युक्त वनस्पतियां
बानौ	बाणासुर, जिसके नाम पर ललितपुर जनपद का सर्वाधिक जनसंख्या वाला गांव श्बानपुरश बसा। आन, बान और शान की त्रियुति में से बान, जिसका अर्थ चमक है
बाट	प्रतीक्षा करना
बसकी	सामर्थ्य में
बसकारैं	बरसात का मौसम
बसन	दैनिक उपयोग के बर्तन
बड़ा गओ	समाप्त होना
बडारे	भेंटें
बउवा	वृद्ध महिला
बदरौट	रहट के खड़े घूमने वाले भौंरा का ऊपर सहारा देने वाली क्षेतिज रूप में थुमियों पर लगाई जाने वाली मोटी लकड़ी
बछेरा	घोडे का बच्चा
बुई	एक पद्धति; जिसमें चारे पानी की उचित व्यवस्था न हो पाने के कारण बैल किसी दूसरे व्यक्ति

	को निश्चित अवधि के लिए इस शर्त के साथ दे दिया जाता है कि वह उसे खिलाए–पिलाए तथा जोते। ऐसी स्थिति में लोग उसे खिलाते–पिलाते कम है और जोतते अधिक है।
बुड़की	मकर–संक्रांति के त्योहार पर लेने वाली डुबकी
बतरा बतरा	इठला–इठला कर बात करना
बेंड़ा	दरवाजे को अंदर मजबूती से बंद करने के लिए लगाई जाने वाली आड़ी–तिरछी लकड़ी
बेपारी	व्यापारी
बेरा	समय से
बैसादुर	वैश्वानर; पूजा में होम लगाने के लिए अग्नि
बेडनी	ग्रामीण वेश्या
बेजारी	बीमारियां
बैन	वाहिनी (जम की धार किधों बरियाता–श्रीरामचरितमानस)
बैनोता	स्त्री की बहन का पुत्र
बेला	बड़ा कटोरा
बजाकें	काँड्रा की संगत में कंसे को थाली जैसा बजाया जाने वाला वाद्य
बजाउ	ओर
बन्न बन्न	विभिन्न प्रकार की
बूरौ	बिना दाने की शक्कर
बूड़	डूब
बगर	पशुओं के इक बँधने या रहने वाला स्थान
बगार	तड़का
बगदर	मच्छर
बलम	प्रियतम
करुला	कुलला
कंसुर	हल का एक पुरजा
कंसलन	कनस्टर या टीन का पीपा
कठवा	काष्ठ
कइले	रोटी सेंकने वाला मिट्टी का तवा
करिया	काले मृग का चर्म (कृष्णाजिन)
कथरी	कई परतों में चिथड़े सिलकर बनाई जाने वाली बिछावन (गुदड़ी)
करयाई	कमर
करेजे	हिम्मत
कांडरा	एक विशेष नृत्य जो धोबियों की शादी में दूल्हा का फूफा या कोई अन्य मान्य व्यक्ति मध्ययुगीन पोशाक पहनकर केंकड्या बजाता हुआ नाचता है
कातें	काटना–कुतरना
कौं	(कहावत) अपनी अलग पंचायत लगाना
कोंठा	आंतरिक पेट
कोंड़ियन	कपर्दिका; कैल्शियम की एक प्राकृतिक संरचना, जो पहले लेन–देन के माध्यम के रूप में प्रयुक्त होती थी
कौंसे	लंबी फलियां
कौरातें	बारातियों को दिया जाने वाला मिठाई–पूड़ी का भोज
कौरो	बिना प्रयोग किया हुआ
कौरें दुपर	पूर्वाह
कौडन	अलाव के पास
कौचा	कलाई के नीचे का हाथ
कसूंड़े	काँस की गुंजी से रगड़कर मिट्टी के बर्तन को अंदर साफ करना
कड़ी	निकली
कड़वे	(कहावत–सुविधा के बदले कभी उससे अधिक मूल्य का श्रम करना पड़ जाए) मजोटन– आँगन के पार बने घर के सामने बनी छपड़ी
कुर्रु–दै	तेज–दौड़

कुठिया	अनाज भंडारण के लिए कच्ची मिट्टी का बड़ा पात्र
कुप्पा	(कहावत) अति प्रसन्न होना
कुरवा	खपरैल घर के छप्पर में लगने वाली सीधी लकड़ी
कफउवा	पूर्ण रूप से
कुदाई	पक्ष
कुदाउं	ओर
कुतका	ठेंगा; अंगूठे द्वारा दिखाया जाने वाला नकारात्मक संकेत
कुनैते	इसके दोनों पाट मिट्टी के होते हैं। नीचे के पाट के बीच में लगा लकड़ी का कीला ऊपर के पाट के बीच में लकड़ी की जइ में फसा रहता है, जिसे हाथ से चला कर धान इत्यादि दला जाता है
कुन्नस	कोर्निश; बहुत हीन होकर प्रार्थना करना
कुलरियन	कुल्हाड़ी से
के	कहना
कै	अथवा
कैनातें	कहावत
कजन	कदाचित
कनक	गेहूं
कनूका	अनाज के दाने
कूत खांड़	जानकारी
कून्ड़ा देव	भगवान शंकर का स्थान– (टीकमगढ़) का पूर्व नाम
कूलत	पीड़ा के कारण उंह का स्वर; जो सांस के साथ बार–बार निकलता है।
कलमस	मैल
कल्दार	चाँदी का रुपया
मठोलबें	मीठी–मीठी बातें करना
मक्कड़ा	नर मकड़ी
मकोर	दूसरे वृक्ष के सहारे बढ़ने वाली कंटीली मजबूत झाड़ी, जिसके लंबे मोटे तने (माडर) का उपयोग लकड़ी के रहँट बनाने में होता है
मीडी	मसल दी
मरका	सींगों से मारने की आदत वाला (पशु)
मायका	विवाहिता स्त्री के माता–पिता का घर
माझै	बीच
मांउ	पौधों के फलों में लगने वाला रोग
मोंइ मोंइ	मुंह ही मुंह में मारते जाने पर भी
माते	प्रमुख
माते	जाति का प्रमुख
मोंगे मोंगे	चुपचाप
मोरी	बैलों की थूथन के ऊपर सींगों के पीछे तक बाँधी जाने वाली रस्सी। इससे पगइया बाँधकर बैलों को नियंत्रित किया जाता है
मोरा	छिद्र
मौड़ी–मौड़न	लड़कियां–लड़के
मान्स	मनुष्य
मान्सखाना	आदमखोर; निर्दयी
मसकई	चुपचाप
मसर	मसूर
मड़इया	गोल छत की छोटी झोंपड़ी
मड़ा	चारों तरफ से पूर्ण सुरक्षित कमरा
मड़वा	मंडप
मुरार	मोटे कमल–नाल, जो शाक बनाने के काम आते हैं।
मुड़धरे	सिर के ऊपर रहने वाली साडी, चादर या रस्सी
मुडी	सिर

मुडीछौ	तकिया
मुन्स	पति
मुगर्रो	ऐसा व्यक्ति; जिसकी सामाजिक पृष्ठभूमि तो कुछ भी न हो किंतु हर बात में पद अड़ाने का शौक हो, व्यर्थ मुंह उठाए घूमने वाला
मुगदर	व्यायाम के लिए प्रयुक्त वजनदार उपकरण
मेओ	मेघ का पानी
मेलें	खेत की सिंचाई के लिए बनाए गए छोटे–छोटे भाग
मेलन	रोकना
मनधरया	दुविधा में रहने वाला
मनपुसाव	मनपसंद
मटुकिया	छोटे आकार का मटका
मूड़ौ	सिरा
मगरे	खपरैल के ऊपर का वह शीर्ष भाग, जहां से छप्पर दो पलानियों में बँटता है।
मलकइयों	उट की सवारी में उट की चाल के साथ सवार की पीठ के साथ सवारी की कमर की लचक का तालमेल
धिंगानों	लड़ाई–झगड़ा
घिचकी	गर्दन
खिच्या	आवेश में
खिन्नी	नीम के फलों की आकृति के मीठे फल
खिलकट	जिसके कील–पुरजे ढीले हों
ढिए	किनारे
ढिंग	समीप
ढिमराउ	ढीमरों का (राग)
ढिरियां	जगह–जगह छेद किया हुआ मिट्टी का घड़ा जिसके अंदर जलता हुआ दीपक रखकर नोरता के अंतिम दिन लड़कियां इसे मुहल्ले के हर दरवाजे के सामने ले जाकर आशीष गीत गाकर पैसा तथा अनाज ध्थ् करती हैं
ठिल ठिलात	खुलकर हँसना
बिएं /बिही	अमरूद
बियारी	रात्रि का भोजन
बियानी	पशुओं का बच्चा होना
बिंतवार	देवता से विनती करते हुए याचना करने वाले लोग
बिबूचन	उलझन
बिरौल	सिंचाई नहर
बिरजो	किसी वस्तु को पाने के लिए हठ करना
बिदनवा	व्यवधान
बिचके	भड़क जाना
बिन्नायकी	बारात निकलने के पूर्व दूल्हा बाजों तथा महिलाओं के साथ मंदिरों में तथा बिरादरी और व्यवहारियों के यहां आशीर्वाद लेने जाता है
बिलमांव	व्यतीत करना
बिलायती	विदेशी
बिलगइयां	सँपेरा
किचकंदे	कीचड़ भरी भूमि
कितै	कहां
किलकिला	पक्षी, जो शिकार के लिए पानी में चोच के बल सीधे गिरता है
मिसमिसात	दाँत पीसकर क्रोध प्रकट करना
हिमार	ठंडा
हिरा	गुम हो गए
हिन्नी–नैनी	हिरणी जैसे नेत्रों बाली
हिलक मिलक	हिलना–मिलना

हिलकियां	सिसकियां
हिलै	ठिकाने से
पियार	धान–कोदों–समा–फिकरा के कुचले हुए डंठल (पुआल)
पिरियां	बांस की मझोले आकार की टोकरी
पिरानो	पीड़ा होना
पिसनारु	चक्की पीसने की मजदूरी करने वाली स्त्री
पिडी	प्रविष्ट
पिल्ला	कुत्ते का नर बच्चा
पिल्ला	रजाई की रुई कहीं इकठ्ठी तो कहीं खाली होने से पड़े झोल
रिसाल	एक प्रथा; जिसमें विवाह के बाद आमों के मौसम में वर पक्ष की ओर से कन्या पक्ष को भेजी जाने वाली आमों तथा अन्य फलों की भेंट
थोंना	मुंह (व्यंग्यार्थ, विकृतिसूचक)
थौना	(कहावत) खीझ होना
थैगरा	फटे कपड़े पर अलग से कपड़े का टुकड़ा सिलना
थूल	पत्थर पर कूचकर
सिपाव	बैलगाड़ी का टेका (स्टॅंड)
सिरा	ाांत
सिड़यान	विवेकशून्य होना
डिमइया	आंखों में आंसू भरे हुए
डिड़याव	ढाड़ मारकर रोना
दिल्दिल घोडी	घुड़सवार का स्वाँग रचने के लिए बाँस की कमचियों और कागज से बनाई गई घोड़े कौ आकृति, जिसकी पीठ में बने छेद में कोई व्यक्ति कंधे पर टाँगकर हाथों में लगाम पकड़कर बाजों की धुन पर नाचता है
छिनका	प्रश्वास का बल लगाकर नाक का बलगम निकालना
छिनरा	लंपट (परस्त्रीगामी)
छिन्न–मिनईयन	हाथों का स्पर्श किए बिना (बिना सहारे के)
चिमानी	ाांत
चिड़के–चिड़काउत	किसी के प्रति घृणा या क्रोध का भाव प्रकट करना
चिनारु	परिचित
चिलचिलात	प्रकाश का परावर्तन (चमकना)
फिराद	फरियाद
तिजारी	दो दिन के अंतराल पर आने वाला मलेरिया बुखार
तिलकूचा	तिली को गुड़ और अदरक के साथ कूटकर बनाए गए लड्डू.
जिमी	जमीन
जिउ	मन, प्राण, जीव
जिन	नहीं
निठुअई	अत्यल्प (बलवाची प्रयोग)
निठुअई	अत्यल्प (बलवाची प्रयोग)
निसैनी	सीढ़ी (लकड़ी या बांस की)
निनवार	सुलझाना
निगबो	पैदल चलना
निगा	दृष्टि
टिया	कार्यपूर्ति के लिए दी गई निश्चित अवधि
टिपरिया	टोकरी
टिन्नाव	बड़ी देर तक आवाज निकलते रहना
टिटई	टिटहरी; लंबी गोंड वाला जल के किनारे रहने वाला पक्षी
टिटकारें	हाँकने का स्वर
गिरुआ	गेहूं की फसल का एक रोग; जिसमें फसल पर गेरू जैसा चूर्ण पैदा हो जाता है
गिरानी	अकाल

गिरदौला	गिरगिट; जिसका रंग क्रीम एवं गुलाबी होता है
गिर्र	घेरा
गिजी	तह बनाना
गिन्डा	टुकड़ा
गिलाव	कीचड़
लिंगा	पास में
लिड़याबें	(संकोच से) लज्जित होना
हंकनी	बैलों को कने वाली लकड़ी
हंडिया	भोजन पकाने का मिट्टी का पात्र (हांडी)
हींसै	कामातुर होने पर पशुओं का विशेष प्रकार से सांस छोड़ना; जैसे वह आपनी उपस्थिति जता रहा हो।
हरसाई	प्रसन्न चित्त
हरैना	हल की हरींस में लगी आड़ी डंडी; जिसके सहारे हल को जुष के साथ बाँधा जाता है
हारै	गांव की कृषि–भूमि या गोचर–भूमि
हौलदिली	उत्साह पूर्वक
होले होले	धीरे–धीरे
हाली फूली	उत्साह एवं प्रसन्नता
हुलकी माई	संक्रामक रोग (महामारी)
हतपउ	हाथ से बनाई गई
हेरम्ब	गणेश का अपर नाम
हेरत	देखते हुए
हेरतन	देखते हुए
हूला दच्ची	उठा–परक
हल–हल	तेजी से
हल्के–बड्डे	छोटे–बड़े
भ्याने	आगामी कल
भबक	फूट–फूटकर रोने की इच्छा दबाने पर भी उसका बार–बार प्रकट हो उठना
भबूती	होम की हुई अग्नि की पवित्र राख
भपका	ऊपरी दिखावा
भरकन	काली मिट्टी वाली जमीन में हो जाने वाला गढ़ढ़ा
भांबई	विपत्ति; जिसे भोगने की अनिवार्यता हो
भांस	कंठ–स्वर
भांस	कंठ–स्वर
भांड़ौं	भंडारण करने या भोजन बनाने के बर्तन
भांडन	वेश्या संतानों की एक जाति; जो गाने–बजाने तथा वेश्याओं की दलाली का काम करती है
भारे	उत्तरदायित्व
भावनो	दही विलोते समय मथानी को सीधा खड़ा रखने के लिए सहारे को गदी हुई लकडी। मथानी एक रस्सी से इससे संयुक्त रहती है, ताकि बह घुमाने वाले की ओर न खिंचे
भात	पके हुए चावल
भौर	भंवर–जाल
भौतरें	संकट
भौजी	बड़े भाई की पत्नी
भाजी	पत्तों से बनाया गया शाक
भुमो	मटकी में रखे दही को मथानी से गोल–गोल घुमाना; जिससे उसका घी उतरा जाए
भुन्सरा	प्रातःकाल
भुनसारे	प्रातःकाल
भन्ना	बड़े सिक्कों के बदले प्राप्त होने वाले छोटे सिक्के (मुद्रा भुगतान)
भन्ना	क्रोध से व्याकुल होना
पयताव	विश्वास करना

पंचाव	(माथा) पच्ची
पंचानन	शिव
पंत	आश्रय मिलना
पंजीरी	थोड़ा घी डालकर भूना हुआ शक्कर मिला सूखा आरा
पकोइ	पकोड़ीं
परिया	गुड़ की भेली
पीक	तरल पदार्थ
पपइयां	बेसन की पतली कुरकुरी पूड़्यां
पर	लेटना
पराई	दूसरे की
परदनी	मर्दानी धोती
परैना	लंबी लाठी; जिसके एक सिरे पर कील लगी रहती है। इसे हल–बखर में जुते बैलों के ळमज पर चुभोकर हाँका जाता है
परजापत	कुम्हार
पांडे	ज्ञानी
पारे	मिट्टी के दिया (दीपक) से थोड़ा बड़ा बर्तन; जिससे बर्तन ढके जाते हैं
पाड़ौ	(कहावत) जोर–जबरदस्ती करना
पौलिया	स्त्रियों के पहनने के जूते
पौर	घर का पहला कमरा
पौड़े	पहाड़े
पोतनी	सफेद मिट्टी; जिससे दीवारें आदि पोती जाती हैं
पोतला	गोल पेंदी को चपटी सुराही; जो बगल में टांगी जा सकती है। किसान इसका उपयोग हार–खेत में करते हैं
पौनी	(कहावत– साधारण काम भी पूरा न कर पाना) राँटा– रहँट, पौनी– सूत कातने के लिए बनाई जाने वाली रुई की वर्तिका
पौनाई	आतिथ्य
पौनछक	द्वारचार के बाद बारातियों को दी जाने वाली बड़ी पूड़ी, जिसके पौन भाग को खाने से ही बाराती छक जाए
पोलें	गुप्त भेद
पानेटा	कुएं पर बीच में रखी जाने वाली मोटी लकड़ी; जिस पर रहँट कौ भरी चलती है।
पदमसंखिनी	निधि–प्रदायक
पछाइं	बाद में
पवारौ	अनिच्छापूर्वक किया गया काम
पच्चे	मौज–मस्ती
पुरा	गांव के एक छोर पर
पुतरा	पुत्रों (बालकों) के लिए प्यार भरा संबोधन
पुजाव	पूजन के समय
पतोरन	झड़े हुए सूखे पत्ते
पते	आशयपूर्ण
पै	हाथ से थपकाकर रोटी बनाना
पैरत	तैरते हुए
पेरै	परेशान करना
पैल	पहले
पनइयां	देशी चमरौंधा जूता
पनपना	आकस्मिक भय से सिहर उठना
पनरा	इसमें रहट को घरियों का पानी गिरता है
पटा	यहां पटा दा अर्थ है; एक का अर्थ चुका देना है तो दूसरे का अर्थ फाड़ देना है
पटा	फाड़कर
पटा बनेठी	पटेबाजी के अभ्यास में काम में लाई जाने बाली वह लाठी; जिसके दोनों सिरों पर ंह लगे रहते

	हैं
पूरन	कटी घास का बँधा छोटा बोझा या पूला
पगही	बैल बाँधने वाली निश्चित नाप की रस्सी
पल्ली	रजाई
रइयत	प्रजा
रई	(कहावत) नाम–मात्र को कोई काम करके बढ़ा–चढ़ाकर उसका प्रचार करना; टांड़रे– लदाऊ पशुओं का झुंड; नैकान– नायकिन
रई	अपने ही व्यक्ति से नुकसान उठाना
रमतुला	अँग्रेजी ष्एस श के आकार का फूँककर बजाने वाला वाद्य
रीत	खाली
रांड	जिसका पति मर गया हो (विधवा)
राई	बुंदेलखंड का प्रसिद्ध लोक–नृत्य, जिसमें नर्तकी नाचते समय राई के दानँ की तरह चारों तरफ छितरा जाती है
राउन	पशुओं का हार–खेत विश्राम का स्थान
राछ–बजाव	विवाह में भांवरें पड़ने के बाद वर–वधू को डेरे (जनवासे) में लाकर वधू की ओली भरने और वधू के साथ आई स्त्रियों का स्वागत करने की क्रिया
रातों	धीरे–धीरे
रौंपतया	जिस काम के लिए रोका जाए, जान–बूझकर बही करना
रौराबे	छेड़ना
रवला	बुंदेली लोक– नृत्य
रेंचकुवा	बच्चों का एक खेल (सी–सा)
रेंगटा	गधे का बच्चा
रैकन	गधे की ध्वनि
संख ढपोल	निकम्मा किंतु बातूनी
संदना	भागने से बचाने के लिए किसी जानवर के आगे के दोनों पैर थोड़ा अंतर देकर बाँध दिए जाते है। इसी बंधन को संदना कहते हैं
संट	भरपेट
सबीदी	स्वादिष्ट
सबरे	सर्वत्र
सकेर	जल्दी
सकेलत	इका करना
समद्याने	(कहावत) अभाव होने पर भी पूर्ति करना
समून्दी	समूची
सहरिया	सौर आदिवासी, जिनकी संख्या उत्तर प्रदेश में सर्वाधिक ललितपुर जनपद में है
सहार	सहनशीलता
सहसानन	हजार मुंह वाले (शेषनाग)
सीयरे	दोपहर ढलने के बाद अपेक्षाकृत हुआ ठंडा वातावरण
सीत	पके हुए चावल का दाना
सीत	अन्न का दाना
सपरा खुरा	हजामत के बाद किया गया स्नान
सपरना घाट	स्नान करने का घाट
सपटौनी	ाीघ्रता
सांपो	कार्य को पूर्ण कर मुक्त होना
साकिन	राजा शालिवाहन
सार	पशु आवास
साव	साहूकार
सोंदनी	रहट की भौरी और भौंरा को संयुक्त रूप से चलाने वाले सलइया–पटिया घूमने के लिए गड्ढा
सोंज	मिलकर
सोरहौ	पाँच लोहे के तथा ग्यारह लकड़ी के कुल सोलह पुरजों को जोड़कर हल बनता है

सोरा गोटी	सोलह गोटियों (कंकड़ों) से खेला जाने वाला खेल
सड़ैरन	छिलका उतरा हुआ सन या अमाई (जूट प्रजाति के पौधे) का डंठल
सउत	सहता हुआ
सद्द	सद्य (ताजा)
स्वापा	पगड़ी
सुद्ध	दूढ़–संकल्पित
सुसाके	सोने के लिए व्यंग्यात्मक प्रयोग
सुद्द–साद	लक्ष्य केंद्रित
सुन्दा	सहित
सुट्ट	चुपचाप
सेंत मेंत	मुफ्त में
सेंट	दुधारू पशुओं से निकलने वाली दूध की धार
सेरो	लगभग एक हाथ लंबे लकडी के डंडों (चाचर) से किया जाने वाला बुंदेली लोक–नृत्य। मोनियां नृत्य भी चाचर की ताल पर होता है
सेव	बेसन की बनी हुई तेल में तली नमकीन भुजिया
सैल	जुएं से बैलों की गर्दन को बाहर निकालने से रोक रखने के लिए लगाई जाने बाली लकड़ी की डंडी
सन्ना	मदमत्त होकर
सन्ना के	तेज गति के साथ
सटत	निर्वहन
सटगैं	ताजी तोडी हुई पतली तथा लचीली लकड़ी का ऊपरी सिरा
सूरी	अंधी
सूद–बांन्द	सीधे
सला	सलाह
उखरी	ओखली
डठूला	नजृर से बचने के लिए माथे पर बगल की तरफ लगाया जाने वाला काजल का टीका
उबनी	द्वारचार (शादी में होने वाली टीका रस्म)
डबला	मिट्टी का लोटे के आकार का पात्र
डकराबो	पेट भरा होने के कारण डकारें लेना
उकसा	फसल आने से पहले ही कच्चे पौधों के सूखने का रोग
डरिया	नमक की डली
डीलन	स्वयं
उपत	स्वतः
उरेला	पौधों को उड़ेल कर निकाली गई तिली
डांगर	बूढ़ी भैंस
डोन्डी	फूल के नीचे की डंडी
डाट	भरपेट से अधिक
उदेरे	ऊपरी पर्त का अलग होना
उदन	उस दिन
उचकत	उछलना
उचेलियो	तवा पर रोटी सकते समय रोटी पलटना
डुकरो	बूढ़ी स्त्री
उतलाचार	अत्याचार
डेड़का	कम लंबी मोटी लकड़ी
डेउन्ना	कड़ी–महेरी आदि टारने की लकड़ी की लंबी चम्मच
उन्ना	ऊर्णा (पुराना अर्थ– ऊनी वस्त्र)
डूंड़	ईधन की अधिक मोटी लकड़ी
डगै	कदम
छ्यूल	पलाश

दई	(कहावत) किसी महत्वपूर्ण या चुटीली बात को अत्यंत सहज दंग से कह देना
छई	सामग्री
दबाई	दवाएं
दायजो	दहेज
छाकड	छंटा हुआ बदमाश
दार	बार (आवृत्ति सूचक)
दारी	एक गाली
छौंकत	(कहावत) अस्वाभाविक चंचलता का दिखावा
दौंदरा	ौतानी
दसयने डेरे	दाएं–बाएं
दसानन	रावण
दच्चउ दच्चौ	आर्थिक नुकसान ही नुकसान
दुबन	दिया जाना
दुपारे	मध्याह
छत्ती	भवन की छतों के आधार के काम आने वाला पत्थर
देहरे	देवगृह
छैलारे	बनठन कर घूमने बाले युवक
दन्न	लकड़ी के चाक पर चढ़ाई जाने वाली लोहे की हाल
दूबरी	दुबली
चंगला	गोटियों और कोंडियों से खेला जाने वाला खेल
चम्मोदर	चमगादड
चपिया	मिट्टी का लोटे के आकार का पात्र
चीं	हार कौ स्वीकृति
चीकट	ादी या उत्सव में बहन, बहनोई के लिए कपडे, आभूषण आदि
चीथरा	फटा–पुराना कपड़ा
चीलरन	वस्त्र में होने बाले जूँ
चर्रानो	व्यग्रता
चांडो	उतावला
चौंखरी	चूहा
चौंरिया	खजूर के चीरे हुए पत्तों से बना छोटा चंवर; जो मक्खियां उड़ाने के काम आता है
चौंटिया	चिकोटी
चोइयन	छोटे पत्तों की बेलें
चौथ जात्रन	भाद्रपद माह की चतुर्थी तिथि को आयोजित होने वाला वार्षिक पर्व
चोटिया	बैलों की सजावट के लिए उनके सींगो और मस्तक पर पहनाया जाने वाला कोंड़ियों से सजा हुआ मोरा वस्त्र
चौतइयां	चबूतरा
चौले	मसखरीं
चुखा	पशुओं के बछड़ों द्वारा चुपके से अपनी मां का दूध पी लेना
चुन्ना	चमगादड़ की आवाज
चुन्ना–पुन्ना	दान–पुण्य के लिए संकल्पित उपभोग सामग्री
चुगलायाए	इधर की बात उधर कहने का आदी
चतुरानन	ब्रह्मा
चैंके	चिकनाई की कमी के कारण घर्षण या घूर्णन वाले स्थान पर चूं–चें की आवाज़ होना
चैंचा–रोरौ	ोर–गुल
चैथी	सिर का पिछला नीचे का भाग
चैत	विक्रम संवत का पहला माह; जिसमें किसान रबी की फसल प्राप्त करता है
चटकत मूड़	सिर दर्द
चटू	एक गाली (जिसके बचपन में ही मां–बाप मर गए हों)
चूलें	खाँचा

फरुरी	सिहरन
फंपूड़ौ	फॅफूंदी लगा हुआ
फरिया	दुपट्टा
फींच	कपड़े धोना
फरा	पानी में उबाली हुई सूख, बासी पूरियां
फापस	पतली पच्चड़
फाजू	बुआ के लिए आदरसूचक संबोधन
फदकौ	दबे हुए क्रोध को स्फुट शब्दों और काम–काज में उठा–पटक से प्रकट करना
फुलकी	छोटी और फूली हुई पुडियां
फूल	मथानी में संयुक्त फूल के आकार का चाक
तरुआ	तालु (मुंह में)
तइया	मिट्टी की कड़ाही
तको	देखा
तकाजो	उगाही
तकें	देखें
तरइयां	तारे
तरी	सबसे नीचे (तल तक)
तरन तरन	आधिपत्य में लेते हुए
ता	आत्मविश्वास
ताई	तरफ
तारी	समाधि
तारें बेड़ें	दरवाजों को बंद कर ताले इत्यादि लगाना
ताव	क्रोध
ताती ताती	गर्म–गर्म
तौलिया	मिट्टी की छोटी हांडी
तोडे	पैरों में पहनने वाला आभूषण
तुबक	बंदूक
तुरवा	उंगलियों से बनाई जाने वालीं सिबइयां.
तुसार	अतिशीत के कारण फसल को लगने वाला रोग
तुनतुनात	एकाएक उत्तेजित होना
तन–फनात	अत्यधिक क्रोधित होकर
जरुवा–बरुआ	इर्ष्यालु
ज्यौरा	रस्सा
जंट	मजबूत
जनियन	स्त्रियां
जात्रा	देवताओं की शोभा यात्रा/पूजन
जाई	पैदा की हुईं
जाते	जतरिया; जिसके दोनों पाट पत्थर के होते हैं और दाल दलने के काम आता है
जुइया	बैलों के कंधे पर रखा जाने वाला पुरजा
जुनई	ज्वार
जुनई	ज्वार.
जनी	महिलाएं
जनी–मान्स	स्त्री–पुरुष
नक	आगे निकलना
नदिया	भगवान शंकर का नंदी बैल
नर्रयाबे	मरणांतक पीड़ा से चिल्लाना
नार	बैलगाड़ी या रथ के पहिए का धुरी पर घूमने वाला भाग
नौं	समीप
नोबत	नौ वाद्य–यंत्रों के समूह को नोबत कहा जाता है

नौरता	आश्विन (क्कांर) मास की नवरात्रि के दिनों में कुमारी कन्याएं अपना अभीष्ट पाने के लिए गीत गाते हुए गौरी–पूजन करती हैं
नौनें	अच्छे
नानो	महीन
नचनारी	नृत्यांगना
नुंगरौ	लहँगे के साथ ओढ़ी जाने वाली ओदनी
नैकें	बैलों को जोतकर
नेरे	पास में
नेव	खेह
नेनू	नवनीत (मक्खन)
नन्नइया	जिसका आकार या उम्र बड़ी न हो
नटेर	आँखों से क्रोध प्रदर्शन करना
अखया अखया	देख–देख कर
अंड गंड	समझ–व्यवहार
अबढाए	अपने–आप
अबेर	देर
अबेरा	कम समय के कारण उत्पन्न परेशानी
टका सी	साफ–साफ
अकुस	संकोच
अथाई	(मुहावरा–अवसर हाथ आते ही आपस में किसी को हानि पहुंचाने वालों का समूह) गुर्गा–भेद लेने के लिए नियुक्त व्यक्ति; अथाई–गांव में बैठने का सार्वजनिक स्थान
अहानें	लोकोक्ति को स्पष्ट करने वाली कहानी
अभंग	संत नामदेव द्वारा रचित पद
अरया	उकसाते हुए
अरया–तुरया	तू–तड़ाक करना
अरकें करकें	आस–पास
अरा	भरी पर ठुकने वाले खड़े डंडे
अर्रानी	भर–भराकर गिर जाना
अरगनी	कपड़े पक के लिए बाँधा जाने वाला बाँस
आखता	हल में अकुरिया और फरेतौ तथा हरीस के संयोजन स्थान पर लगाई जाने वाली पच्चड़
टांके	बच्चों को गोदी में रखकर
टाठी	थाली
आकरौ	(जरूरत से ज्यादा) तेज चलने बाला
आकरें	रॉंटा– रुई कातने का एक प्राचीन यंत्र, पौनी– रुई
आसों	इस वर्ष
आवा	मिट्टी के बर्तन पकाने का भट्टा
आतमेति	सबको आत्मवत देखना
औखद	औषधि
टौरियन	छोटी पहाडिया
औरए	दूसरे
ओसरी	बारी
ओछी	आवश्यकता से कम
औनी पौनी	गुण–दोष
टोटो	अभाव
ओलम	वर्णमाला
औली	गोदी
आजी	पिता की माता (दादी)
टाली	गर्भधारण बंद हो चुकीं (बूढी) गाय
असास	राजाओं के शयन के लिए प्रयुक्त शब्द

असड़ोये	आषाढ़ मास का समय
अड़बंगा	अटपटा
अड़की	लेन–देन की एक पुरानी बहुत छोटी इकाई
अड़ी–तड़ी	विकृत हो जाना
टउका	कहावत या मुहावरे से संबंधित छोटी कहानी
टउका	कहावत या मुहावरे से संबंधित छोटी कहानी
अवलाखा	अभिलाषा
अचीती	आकस्मिक
अचै	आचमन करना; खाने के बाद हाथ धोना
अफरे	(भोजन करके) तृप्त होना
टुड़ी	टुंडी (नाभि)
अतफरया	अवांछित व्यक्ति
अनबोलनो	संवादहीनता
अनी	सेना
अनुचान	अनिर्वचनीय; जिसके लक्षण आदि अवर्णनीय हों
अन्ज	अन्यत्र
अन्जर पंजर	जर्जर–(अस्थि) पंजर
टन्ना के	असामान्य आवाज; जिसमें ध्वनि अवरुद्ध हो जाती है
अगारु	सम्मुख
अगौनी	आतिशबाजी
अगवान	पहल करने वाला
गकइंया	बाटियां
गक्कड़ा	बड़ी गकरिया/बाटी
गरओ	भारी
गांसी	छुपा हुआ क्रोध या प्रतिहिंसा का भाव
गांज	घास का व्यवस्थित स्तूप जैसा ढेर
गांगरे	बेसुरे
गाड़र	भेड़
गावे	तने का भीतरी मुलायम भाग; जिसे लोग खा लेते हैं
गोटियां	देहरे पर चतुर्थी तिथि को गांव के लोग इकर होकर कारसदेव की प्रशस्ति (गोट) गाते हैं और पैरों पर ढांक रखकर छोटे से टेटे डंडे से बजाते हैं
गोपी चन्दन	पवित्र नदियों की रज से बना चंदन
गोसली	गायों को दुहने तथा उनको चारा आदि डालना
गोउं रुप	गेहुंआ वर्ण
गोउत	फूलों की माला को गुँथना (पिरोना)
गोड़े	पैर
गोदन बाबा	दीवाली के अगले दिन होने वाली गोवर्धन पर्वत पूजा
गानों	जेवर
गानें	गिरवी; जिसमें नगद धन के बदले भूमि जेवर आदि ऋणदाता के अधीन कर दिया जाता है
गागये	गहरे रंग के पके फल
गड़ई	लोटा
गड़ोई	गाड़ी हाँकने वाला
गडुबा	बड़ा लोटा
गदरा	अधपका
गदा	गदराए हुए ज्वार के भुट्टे
गदेलो	धनुषाकार लकड़ी; जिसे बैलों द्वारा खींचा जाता है
ग्वा	प्रदान करना (बलवाची प्रयोग)
गुइया	मित्र
गुथनिया	मिट्टी का ढेला रख–घुमाकर ज्वार, मक्का आदि की फसलों पर चिडियां उड़ाने के लिए फेंका

	जाता है
गुनिया	ग्राम–देवताओं के पुजारी, जिन्हें संबंधित देवता का आवेश आता हो
गुलिया तेल	महुआ–फल का तेल
गुपती	गुप्त रूप से छड़ी के अंदर रखी जाने बाली एक किरच या पतली तलवार
गुरीरौ	मीठे
गुर्र	बदले की भावना
गुड़इयां	गोल बोधकर बैठना
गुड़ी	छल–कपट
गुच्च	चुभाना
गुट्ट	दुर्निवार समस्या
गुट्टा	बांस की छोटी टोकरी
गुट्टू	बांस की छोटी टोकरी
गुटउवा	बुंदेलखंड के ठाकुरों में पुराने जमाने में प्रचलित एक रिवाज; जिसमें बारातियों के किसी अशालीन व्यबहार से नाराज होकर या बारात के धनी की औकात परखने के लिए कन्या पक्ष की ओर से बारात को भोजन–पानी सब बंद कर दिया जाता था। गांव में उन्हें कुछ नहीं मिलता था। वर पक्ष यदि सामर्थ्यवान होता था तो वह व्यवस्था करता था, अन्यथा बारात भूखों मरती थी
गुली	महुए के बीज
गुलचा	बँधी हुई ंज से अंगूठा और तर्जनी की तरफ से गाल पर हल्का आघात
गुलेंदे	महुआ का फल, जिसमें एक या दो बीज (गुली) होते हैं
गुलगुच	महुआ का पका हुआ फल (महुआ–मेवा बेर–कलेवा, गुलगुच बड़ी मिठाई, जे सब चीजें चानें होय तो बुंदेलखंड में करो सगाई)
गतके	मुक्का
गेंवडें	गांव की आसपास की भूमि; जिसका उपयोग ग्रामीण शौचादि करने के लिए भी करते थे
गेर	सब ओर से
गैल	रास्ता
गैलारे	पथिक
गजरा	माला
गजरा	फूलों का हार (निर्माल्य)
गजानन	गणेश
गजती	सौंदर्य सूचक
गूजरी	अहीर स्त्री
गलयाव	गलियारा
लख	देखकर
लठारा	कोदों/फिकरा की जाति के अनाज,
लठैगर	लठ्ठबाज
लबरा	झूठ बोलने वाले
लमया	बढ़ जाना
लांटें	तेल के कोल्हू में तिर्यक रूप से चलने वाली लकड़ी; जो तिलहन को कुचलती हुई चलती है
लाड़	प्यार जताने का व्यवहार
लौंदा	0 जमे हुए मक्खन का पिंड
लोब	प्रलोभन
लोबन	लोभ में
लौरी	छोटी
लौरे	पानी में तैरती हुई
लोड	पत्थर का टुकड़ा
लोआ	लोहा
लौटती जोरै	अपराह
लौलइयां	सांध्यबेला
लौलइयन	संध्याकाल; जब अँधेरा छाने लगता है

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

लाल–बुझक्कड	जानकार
लड़याबें	लाड़–प्यार के कारण मुंह लगाना
लड़इया	सियार
लवा	तीतुर की तरह का एक पक्षी; जिसकी धूल में लोटने की आदत होती है
लफ लफ	लचक–लचक कर
लुख्खो	मादा सियार
लुखा लुखे	उषा पूर्व का समय
लुडियां	कंकड़ से थोड़ा बड़ा पत्थर का टुकड़ा
लुड़याबे	(मुहावरा) आंखें पथरा जाना
लेखे	हिसाब करना
लेंड़ा लेंड़ी	कुत्ता
लूगर	जलती हुई लकड़ी
लगायं	दुहना

शिक्षा व्यवस्था के कारण भाषा

बान्दा ही क्या? बुन्देलखण्ड क्षेत्र व बान्दा में भी शिक्षा की वास्तविक रूप में बहुत कमी है और कुछ यहां के अभिभावकों के द्वारा शिक्षा में विशेष अभिरुचि और ध्यान ना होने के कारण इस तरह की व्यवस्था उत्पन्न हुई है। क्षत्रियों को भी शिक्षा की दशा बहुत ही शोचनीय हैं। केवल कुछ प्रतिशत जनसन्ख्या ही पढ़े लिखे हैं। वर्तमान 2000ई0 में जबकि सभी जातियां शिक्षा प्राप्त कर सकती हैं, अब शिक्षा प्राप्त कर अपने सामाजिक आर्थिक राजनीतिक दशा स्थिति को सम्भाल रही हैं, क्षत्रिय आज भी इसकी और बहुत ज्यादा ध्यान नहीं देते हैं। 21 जिलों में जो बुन्देलखण्ड क्षेत्र व बान्दा से सम्बन्धित हैं, उनकी शिक्षा का विशेष प्रबन्ध किया गया है।

भारत सरकार द्वारा वर्तमान में बोर्डिन्ग स्कूल खोलकर छात्रों को भोजन, वस्त्र, पुस्तकें आदि सब मुफ्त में दी जाती हैं परन्तु इतनी सहूलियत होते हुए भी छात्र व अभिभावक इसकी तरफ कोई विशेष ध्यान नहीं देते। अब इन सम्भव प्रयासों से, सरकारी नौकरियों की तरफ कुछ ध्यान दिया जाने लगा है।

इसके पीछे वस्तुतः मूल कारण है– रिजर्वेशन ।

जमीनों का बटवारा –जहां पहले लोगों के पास प्रति परिवार 3000–4000 बीघा (जमीन मापने की इकाई बान्दा में एक बीघा लगभग 1750 से 1900 वर्ग मीटर का होता है और जगह जगह परिस्थितियों के अनुसार इस बीघे की लम्बाई चौड़ाई कम ज्यादा होती रहती है) हुआ करती थी, अब लगातार जमीन का बन्टवारा होने के कारण प्रति व्यक्ति अगर परिवार अलग हो चुका है तो प्रति परिवार 10 से 15 बीघा ही आती है, जिसमें गुजर–बसर करना बहुत मुश्किल है। केवल भोजन ही प्राप्त किया जा सकता है। सरकारी नौकरी (व्हाइट कालर जाब) प्राप्त कर सकते हैं, के लिए पढ़ते हैं। हस्तकला की तरफ, इस इलाके में कोई रुचि नहीं है क्योंकि इसे निम्न स्तर का कार्य माना गया है। मेकाले शिक्षा द्वारा (व्हाइट कालर जाब) ही प्राप्त कर सकते हैं।

राजा महाराजाओं की शिक्षा डेली कॉलेज, इंदौर तथा अजमेर कॉलेज में हुआ करती थी। 1872 ईसवी में नौगांव में राजकुमार कॉलेज खोला गया था पर वह सन 1892ई0 अर्थात् 20 साल के बाद ही बन्द हो गया। मां बाप, अभिभावक बच्चों को जबरदस्ती कॉलेज में भेजा करते थे। लेकिन बचपन के गलत आचरण, घरेलू सन्कारों व व्यवहार के कारण वे छात्र कालेज से भाग जाया करते थे और उनको कहीं से भी पकड़कर कॉलेज लाने का व्यवस्था की गई थी। शिक्षा मन से की जाती है, अतः 20 साल के बाद यह कॉलेज भी बन्द हो गया। पुराने समय में इस इलाके में स्त्री शिक्षा नगण्य थी। वर्तमान में भी मतलब 2000–2010 ईसवी में स्कूलों की व्यवस्था सराहनीय नहीं है। बहुत से प्राइवेट स्कूल जो सैकड़ों की सन्ख्या में है, खुले हुए हैं लेकिन भ्रष्टाचार के चलते उनमें केवल प्रवेश कराया जाता है और फीस लेकर साल के अन्त में किसी तरह भ्रष्ट तरीके से परीक्षाएं दिलवाकर, प्रमाणपत्र दे देते है। विज्ञान जैसे विषयों में जो प्रयोगात्मक आधारित हैं उनकी प्रयोगशाला में भी स्कूलों में, कॉलेजों में नहीं है फिर भी सभी को एक सर्टिफिकेट मिल जाता है, जो उनको बेरोजगार की श्रेणी में डाल देता है। शिक्षा का ज्ञान है नहीं, और नौकरी के लिए, रोजगार के लिए भटकते फिरते हैं। 2017ई0 से कुछ कठोरता अपनाने के कारण इस तरह के कॉलेज बन्द होने शुरू हो गए हैं। फिर भी केवल सर्टिफिकेट प्रमाण पत्र लेने के लिए अभी भी बहुत से स्कूल चल रहे हैं जो प्रभावशाली व्यक्तियों के द्वारा ही चलाए जाते हैं।

भाषा व स्थानीय बोलियां **Language & Local Dialects**

भाषा व स्थानीय बोलियां **Language & Local Dialects**

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

सन्दर्भ / सौजन्य

बुन्देलखण्ड ठदकं ेपिजवतल इनदकमस ूवतक बीमबा संगउप ूवतक ंदक इववा ।चचतवग 500 ूवतके
ठनदकमसींदक14, 15 अपदपजं
ठनदकमसींदक15